एक लकीर महिला हिंसा के खिलाफ़

(महिला हिंसा के ख़िलाफ सोलह दिवसीय अभियान पर एक रिपोर्ट- 25 नवंबर से 10 दिसंबर 2021)

'ये हमारी ज़िंदगी पर पड़ने वाली लकीरें है, जितनी बार हिंसा झेलते हैं, उतनी लकीरें हमारी ज़िंदगी पर निशान छोड़ती हैं। घर, बाहर सब जगह, ये हिंसा होती है। कई बार दीवार ख़त्म हो जाती पर हिंसा की लकीरें नहीं ख़त्म होतीं। हमारी बेटियां हमारी इन लकीरों की मूक गवाह हैं। वो इन लकीरों को महसूस कर सकती हैं, आख़िर यही सब तो उनके हिस्से भी आने वाला है, क्या पता आ भी चुका हो! लेकिन अब लकीरें दीवारों पर नहीं हिंसा और हमारे बीच होनी चाहिए!'-यूएन विमेन की एक शार्ट मूवी' लकीरे' देखने के बाद बवाना समुदाय की 26 वर्षीय एक महिला की यह टिप्पणी थी। लगभग पैंतालीस की संख्या में महिलाएं एक हॉल में बैठकर इस मूवी को देख रहीं थीं, जिसमें कोई संवाद नहीं था। लेकिन शायद संवाद की जरूरत थी भी नहीं। विषय उनके जीवन का हिस्सा था। उस मूवी में दिखाए जाने वाले हिंसा के घटना चक्र को वे अपनी ज़िंदगी के साथ जोड़ कर महसूस कर रही थीं।

दौड़ती भागती ज़िंदगी में, हर साल महिला हिंसा के ख़िलाफ चलने वाला 16 दिवसीय अंतरराष्ट्रीय अभियान, इस मुद्दे पर रुक कर सोचने और मंथन करने को मजबूर करता है - महिला हिंसा जो अलग अलग रूपों में हर महिला के व्यक्तित्व, विकास और जीवन को अलग अलग स्तर पर प्रभावित करता है, हमने इसे ख़त्म करने की दिशा में कितना सफर तय कर लिया है? 25 नवंबर से 10 दिसंबर तक चलने वाले इस अभियान में जागोरी हर साल अपने कार्य क्षेत्र में इस मुद्दे पर अलग अलग तरह के जागरुकता कार्यक्रमों का आयोजन करती है। इस साल भी चारों समुदाय- ताजपुर पहाड़ी और बिलासपुर कैंप (बदरपुर), बवाना और मदनपुर खादर, में इन सोलह दिनों के बीच जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसके अंतर्गत फिल्म स्क्रीनिंग और चर्चा हुई। चारों समुदाय में - लकीर, रिलेशनशिप मैनेजर और फोर्स तीन शॉर्ट मूवी दिखाई गईं जो की महिला हिंसा से संबधित थीं। चारों ही समुदाय में 40 से 60 महिलाएं शामिल हुईं, और चर्चा में लगभग सभी की भागीदारी बनी। बदरपुर के दोनों समुदाय-ताजपुर पहाड़ी और बिलासपुर कैंप में जहां कम्युनिटी लीडर्स ने ही चर्चा की शुरूआत की और चर्चा को बांधने का काम किया वहीं बवाना और मदनपुर खादर में जागोरी की वायलेंस टीम ने स्क्रीनिंग के बाद चर्चा की पहल की।

2 मिनट 43 सेकेंड की मूवी 'लकीर' जो की विषय को एक प्रतीकात्मक रूप देते हुए, महिला हिंसा के अलग अलग रूपों को व्यक्त करती है। लकीर के माध्यम से फिल्म की मुख्य पात्र अपने ऊपर होने वाली हिंसा को अभिव्यक्त करती है। उसे घर की चारदीवारी, सार्वजनिक जगह, और काम की जगह-हर जगह अलग अलग रूपों में हिंसा को झेलना पड़ता है। इसमें संवाद नहीं है, इसलिए व्यक्तिगत व्याख्या की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। चारों ही समुदाय में 'लकीर' की स्क्रीनिंग के बाद इन महिला दर्शकों की व्याख्या कुछ एक जैसी थी और कुछ अलग भी। लगभग सभी का कहना था कि महिलाओं को कई तरह की हिंसा का सामना करना पड़ता है जो इस मूवी में दिखाया गया है। कुछ का कहना है कि मुख्य पात्र अपने ऊपर होने वाली हिंसा को दर्ज़ कर रही है, ऐसी जगह पर जहां किसी की नज़र न पड़े। महिलाएं भी अक्सर अपने ऊपर होने वाली हिंसा को खुद तक ही रखती है, ज़ाहिर नहीं करती है। कुछ महिलाओं ने कहा कि इसकी वज़ह यह होती है कि समाज में या लोग से उसे कोई मदद नहीं मिलती है, जबकि बिल्कुल साफ साफ नज़र आता है कि उसे परेशान किया जा रहा है। कुछ का कहना था कि महिलाओं के ऊपर जितनी तरह की हिंसा होती है, उसके निशान उनके मन पर हमेशा के लिए बन जाते हैं। उन निशानों से वह कभी मुक्त नहीं हो पाती। कुछ महिलाओं ने कहा की मुख्य पात्र लकीरें दीवार पर खींच रही हैं जब जब उसके साथ हिंसा होती है, दीवार ख़त्म हो गई लेकिन हिंसा की लकीरें ख़तम नहीं हुईं। मुख्य पात्र की बेटी इस बात का प्रतीक है कि हिंसा का ये चक्र एक पीढ़ी से दूसरी पीड़ी तक पहुंच जाता है, हिंसा करने का भी और हिंसा सहने का भी। मुख्य पात्र जब दीवार पर अपनी हिंसा को दर्ज़ नहीं कर पाती तो बेटी मां की हिंसा को दर्ज़ करती है, इस घटना पर महिलाओं का कहना था कि ये नहीं होना चाहिए, दीवार पर अपने ऊपर होने वाली हिंसा की लकीर को खींचने की जगह हमारे और हिंसा के बीच एक लकीर खींची जानी चाहिए। बस अब और हिंसा नहीं।

दी रिलेशनशिप मैनेजर-(निर्देशन-नीरज पांडेय, प्रोडयूसर-शीतल भाटिया) 12 मिनट और 18 सेकेंड की एक शॉर्ट मूवी है जो घरेलू हिंसा के मुद्दे को उठाती है। किस तरह घरों के अंदर महिलाओं को करीबी रिश्तों में हिंसा झेलनी पड़ती है और वे इसका ज़िक्र भी नहीं करती हैं। घरेलू हिंसा के पूरे चक्र को संवाद के माध्यम से सामने रखा गया है-' जब पहली बार होता है तो एक्सिडेंट सा लगता है..... फिर एक सॉरी आ जाता है, और ऐसा लगता है अब दोबारा नहीं होगा। फिर लगातार होता है..... और हर बार सॉरी।' इस फिल्म की पटकथा लॉकडाउन से तुरन्त बाद की है, और आंकड़ें बतातें हैं कि लॉक डाउन के दौरान घरेलू हिंसा के मामलों में बहुत बढ़ोतरी हुई। महिलाओं ने फिल्म को बहुत सराहा कि किस तरह एक अनजान व्यक्ति महिला हिंसा को पहचानता है और उसे रोकने की कोशिश करता है। उनका कहना था कि महिलाओं के प्रति होने वाली हिंसा को रोकने के लिए पुरुषों की भागीदारी भी बहुत जरूरी है। महिलाओं के साथ हिंसा के चक्र पर बातचीत की गई। महिलाओं ने मूवी में पुरुष पात्र द्वारा घरेलू कामों में साझेदारी को भी बहुत सराहा। इन महिलाओं में कम्युनिटी लीडर्स भी शामिल थीं, उनका इस मूवी को देखने के बाद कहना था कि इस तरह के कई मामले घरेलू हिंसा के आते हैं जिसमें पीड़िता अपने साथ होने वाली हिसा को छुपाती है, ऐसे में इसे रोकने के लिए हस्तक्षेप करना थोड़ा मुश्किल हो जाता है। वे डरती हैं, झिझक भी होती है, घर के बड़े बुजुर्ग भी उस पर बात छुपाने का दबाव डालते हैं। उनका कहना था कि इस फिल्म की तरह ही पीड़िता तक पहुंचने के रास्ते हमें निकालने होंगे।

तीसरी फिल्म 'फोर्स'-(डायरेक्टर-सूरजपाल स्टोरी, स्क्रीनप्ले-रूपक शाह) वैवाहिक संबधों में बलात्कार और एकल मां को समाज में किस तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ता है, इस तथ्य को पटकथा के माध्यम से रखा गया है। फिल्म में दो बहने हैं बड़ी वैवाहिक संबध में दबावपूर्ण शारीरिक संबध झेल रही है, दूसरी प्रेम संबध में रिश्ता न टूट जाए इस डर से प्रेमी की जायज नाजायज़ सभी मांगों को पूरा करने के लिए मजबूर है। बड़ी बहन कहती है कि अपनी हिंसा को इस लिए झेल रही है और शादी को नहीं तोड़ रही है क्योंकि समाज मां पर पूरा दोष डालेगा कि क्योंकि वह एकल थी इसलिए बेटियों का पालन पोषण ठीक से नहीं हुआ। मूवी के बाद चर्चा में यह बात रखी गई कि वैवाहिक जीवन में पत्नी की सहमति के बिना शारीरिक संबध भी एक हिंसा ही है, जो की बहुत संवेदनशील मामला भी है और कैसे पुरुष साथी को इस बारे में बताया जाना जरूरी है। कुछ युवा सहभागियों ने बॉयफ्रेंड के द्वारा की जाने वाली हिंसा जो की इस फिल्म में दिखाया गया था, के संदर्भ में अपने विचार रखें। उनका कहना था कि ऐसे रिश्तों में से समय रहते निकल जाना ज्यादा सही है, क्योंकि बाद में यह और ज्यादा बिगड़ ही सकता है, ठीक नहीं हो सकता। साथ ही जो बात पसंद न हो उसे 'नहीं' बोलना भी आना चाहिए।

मूवी स्क्रीनिंग और उस पर फिर चर्चा का यह कार्यक्रम सभी सहभागियों को बहुत पसंद आया। सोलह दिवसीय अभियान के बारे में सभी सहभागियों को जानकारी दी गई। साथ ही सभी सहभागियों ने मिलकर 'हिंसा न करेंगे, न सहेंगे और न ही होंने देंगे' की शपथ ली और अपनी हथेलियों से इस शपथ पर मुहर लगाया। बिलासपुर कैंप में चर्चा के बाद महिलाओं ने 'हिंसा मुक्त परिवारों से बनता है, हिंसा मुक्त समाज' का बैनर लेकर समुदाय का दौरा किया और लोगों को सोलह दिवसीय अभियान के बारे में बताया।